REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 10 | JULY - 2024

सतना जिले के धार्मिक पर्यटन स्थलों का अध्ययन

वीरेन्द्र कुमार वर्मा
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर. के. शर्मा
प्राचार्य
इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –

धार्मिक पर्यटन स्थलों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो संस्कृति, धर्म, और ऐतिहासिक महत्व से जुड़े स्थलों को अध्ययन करता है। यह अध्ययन उन स्थलों की समझ में मदद करता है जो धार्मिक प्राथमिकताओं, धार्मिक उपलब्धियों और सांस्कृतिक प्रभाव को दर्शाते हैं। धार्मिक पर्यटन कई प्रकार की रुचियों से प्रेरित हो सकते हैं, जैसे धर्म, कला, वास्तुकला, इतिहास और व्यक्तिगत वंशावली। लोग पवित्र स्थानों को दिलचस्प और मार्मिक पा सकते हैं, चाहे वे व्यक्तिगत रूप से धार्मिक हों या नहीं। भारत धार्मिक स्थानों का देश है. प्राचीन समय से ही भारत में तीर्थाटन यानि धार्मिक पर्यटन की परंपरा रही है. प्राचीन भारत में लोग पैदल या अन्य साधनों से सैकड़ों किलोमीटर की यात्राएँ करके तीर्थाटन करते थे। अब परिवहन के नए साधनों ने धार्मिक पर्यटन को ज्यादा व्यापक और लोकप्रिय बना दिया। देश में हर साल पर्यटन से होने वाली कुल आय का करीब 60 फीसदी राजस्व धार्मिक पर्यटन से ही आता है।

मुख्य शब्द – धार्मिक, पर्यटन स्थल, संस्कृति एवं धर्म।

प्रस्तावना –

मानव के मानसिक विकास के क्रम में जब प्राकृतिक घटनाओं, प्रकृति की अजेय शक्तियाँ तथा गूढ़ रहस्यों को समझने में उसने अपने आपको असमर्थ पाया तो उसने इस दिशा में चिंतन प्रारंभ किया और ऐसी तमाम बातों को एक अज्ञात, अज्ञेय, अदृश्य शक्ति मानकर ईश्वरीय रूप में स्वीकार किया। प्रत्येक उस कारण को जिसका अर्थ निराकरण मानव मस्तिष्क के बाहर या उसने ईश्वरीय रूप देकर उनके प्रति समर्पण, निष्ठा और आदर भाव दिया, यहीं चिंतन का क्रम कालान्तर में ईश्वर भगवान के रूप में उभर कर आया।

आरंभ में वायु, अग्नि, जल व उन तमाम वस्तुओं, जीव–जंतुओं, बीमारियों, प्राकृतिक, अजेय शक्तियों को जो कि मानव जीवन के लिए प्राणलेवा साबित हो रही थी। भयाकुल होकर मानव में आदर लेना शुरू किया। सम्भवतः यह अपने चिन्तन से इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि ऐसी तमाम शक्तियाँ, पूजा, अर्चना या आदर भाव से नियंत्रित की जा सकती है।

विश्व का कोई प्राणी हो मृत्यु के भय से यह कभी–भी क्षणभर के लिए मुक्त नहीं हुआ। मृत्यु भय से मानव को इस दिशा में चिंतन के लिए बाध्य किया। नाना प्रकार की व्याधियों, रोगों का निवारण करने में मनुष्य सफल भी हुआ लेकिन अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुँचा की मृत्यु अवश्यम्भावी एवं सत्य है। शरीर नश्वर है लेकिन

आत्मा अमर है। जिस प्रकार शरीर दैनिक जीवन में पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार आत्मा भी पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। मनुष्य बार–बार मरता है तथा बार–बार पैदा होता है लेकिन आत्मा अमर है वह न मरती है न पैदा होती है। मृत्यु जन्म के अनवरत चक्कर से वह तभी छूट सकता है जब उसकी आत्मा ईश्वर में विलीन हो जाये और आत्मा को ईश्वर की प्राप्ति का एक ही मार्ग है सत्कर्म (कर्म), धार्मिक यात्रा इन्हीं सत्कर्मों को व इनकी प्राप्ति हेतु उत्पत्ति हुई। इसी को तीर्थ यात्रा भी कहा गया है। तीर्थ का अर्थ है जिसके द्वारा तरना संभव हो सके। धीरे–धीरे तीर्थ शब्द इतना विस्तृत हो गया है कि प्रत्येक उत्तम कार्य, भावना, व्यक्ति प्रकृति जो कि मनुष्य को सत्कर्म की दिशा मे प्रेरित करती है, तीर्थ माना जाने लगा। ऐसे स्थलों को जाना, ऐसे व्यक्तियों के दर्शन व संसर्ग में आना भी बहुत पुण्य कर्म माना गया और इसी मानसिकता व चिंतन की आधारशिला पर खड़ा हुआ तीर्थयात्रा या धार्मिक यात्रा का स्तम्भ, धीरे–धीरे तीर्थयात्रा में फल प्राप्ति का भाव भी शामिल हो गया और कई तीर्थ यात्रायें, फल या इच्छा प्राप्ति के लिए भी की जाने लगी। इस प्रकार तीर्थयात्रा का उद्भव धार्मिक यात्रा से हुआ है जो तीर्थयात्रा के नाम से भी जानी जाती है।

तीर्थ शब्द की व्युत्पत्ति ती (तीर्थ) र्थ (अर्थ) से हुई। विद्वानों के अनुसार संसार में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार पदार्थ हैं जिनमें से अर्थ (धन) तीर्थयात्रा में खर्च होता है और शेष तीनों पदार्थों की सिद्धि को तीर्थ कहते हैं। तीर्थ का अर्थ है पवित्र करने वाला सामान्यतः उस नदी, सरोवर, मन्दिर अथवा भूमि के पास अज्ञात रूप से नष्ट हो जाते हैं। आर्य धर्म की मान्यताओं के अनुसार संसार एक विशाल भव सागर है, जिसको पार करने के लिए तीर्थ धार्मिक यात्रा एक साधन है, तीर्थो के वातावरण में पहुँचकर मनुष्य निष्पाप हो जाता है। अतः तीर्थ का अर्थ है जिसके द्वारा तैरना संभव हो सके।

विश्लेषण –

पर्यटन का सामान्य अर्थ सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौंदर्य स्थलों का थोड़े समय के लिये भ्रमण करना है। पर्यटन के लिए पर्यटक का उद्देश्य, मनोरंजन, छुट्टी मनाना, स्वास्थ्य लाभ, ज्ञानवर्धन, धार्मिक उद्देश्य, आकर्षण, खेलकूद या शैक्षणिक किसी भी रूप में हो सकता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य होता है धार्मिक स्थलों के पर्यटनीय पोटेंशियल को प्रकट करना। यह पर्यटकों को धार्मिक यात्रा के लिए प्रेरित करता है और स्थानीय आर्थिक विकास में भी मदद करता है। सतना जिला अपने ऐतिहासिक धार्मिक और खूबसूरत पर्यटन हेतु आकर्षण केन्द्र है। सतना जिले के धार्मिक आकर्षण का विवरण इस प्रकार है –

- **चित्रकूट धाम** – भगवान श्रीराम के वनवास काल का हिस्सा रहा। चित्रकूट की पावन भूमि में थोड़ी–थोड़ी दूर पर उस समयावधि के अभिशेष दृष्टिगोचर होता है। यहाँ पर पर्यटन आकर्षण की दृष्टि से अनेक ऐसे धार्मिक स्थान उपलब्ध है जो उस समयावधि के साक्ष्य से है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीराम अपने 14 वर्ष के वनवास काल का 11 साल की समयावधि चित्रकूट में ही व्यतीत किये थे। उसके पश्चात् पंचवटी (नासिक) में व्यतीत किये थे और वहीं से सीता हरण हुआ था। मंदाकिनी नदी के तटीय भाग पर विद्यमान चित्रकूट जहाँ देश के कोने–कोने से भक्तगण बड़े ही श्रद्धा भक्ति भाव से वर्ष भर आना जाना लगा रहता है। चित्रकूट में घूमने एवं भक्तों को दर्शन करने के लिए ऐसे स्थल दृष्टिगोचर होता है जो त्रेतायुग के इतिहास के साक्ष्य है। चित्रकूट के दर्शनीय स्थान के अन्तर्गत गुप्त गोदावरी, रसोई, सती अनुसुइया आश्रम, अत्रि आश्रम, और सीता माता के पैरों के निशान आदि हैं।
- **मैहर माता मन्दिर** – मैहर का शारदा माता का मन्दिर सतना शहर का एक सुविख्यात धार्मिक स्थल है। यह मन्दिर सम्पूर्ण राष्ट्र में प्रसिद्ध है, शारदा माता के दर्शन करने हेतु सम्पूर्ण भारतवर्ष के व्यक्ति आते हैं। इस मन्दिर में नवरात्रि के समय सर्वाधिक भीड़ रहती है। यहाँ पर मेले का आयोजन भी होता है। शारदा माता का मन्दिर एक प्राचीन मन्दिर है, यह मन्दिर एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है, जिस त्रिकूट पर्वत के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस मन्दिर में पहुँचने हेतु सीढ़ियों का निर्माण किया गया है। यहाँ पर तकरीबन एक हजार सीढ़ियाँ अथवा उससे अत्यधिक सीढ़ियाँ भी हो सकती है। यहाँ पर श्रद्धालुओं को मन्दिर तक पहुँचने हेतु रोपवे की सुविधा मौजूद है। मन्दिर से चारों तरफ का नज़ारा देखने में काफी आर्कषक लगता है जो पर्यटन के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। बरसात के समयावधि में यहाँ पर चारों तरफ हरियाली देखी जाती है। शारदा माता मन्दिर में आल्हा एवं उदल की कहानी प्रसिद्ध है, विदित होता है कि आल्हा एवं उदल माँ शारदा के बहुत

बड़े भक्त थे तथा सबसे प्रथम पूजा उन्हीं के द्वारा की जाती है। यहाँ पर परिवार या मित्रों के साथ आ सकते हैं, इस स्थान पर खाने पीने हेतु बहुत सारे होटल मौजूद हैं। जहाँ पर्यटक को सम्पूर्ण सुविधाएँ सरलता से उपलब्ध हो जाती है।

- **नीलकंठ बाबा आश्रम** – नीलकण्ठ बाबा आश्रम सतना में विद्यमान एक धार्मिक पर्यटन स्थल का आकर्षण केन्द्र है। नीलकंठ आश्रम मैहर के पास में विद्यमान है। पर्यटकों को इस स्थान पर प्रकृति का बहुत ही मनोरम दृश्य एवं मन्दिर देखने हेतु मिलती हैं यह आश्रम मैहर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पर्यटकों को यहाँ पर प्राचीन मंदिर राधा कृष्ण जी का परिलक्षित होता है। इस स्थल पर एक गहरी खाई है, जो काफी आकर्षक लगती है। बरसाती मौसम के समय यह हरियाली से भर जाती है। बरसात के दिनों मे बहुत सारे झरना पर्यटकों को देखने के लिए मिलती है। कहा जाता है कि महाराज नीलकंठ जी यहाँ तपस्या किये थे और उन्हीं के द्वारा राधा कृष्ण जी का मन्दिर स्थापित किया गया था। यहाँ पर भगवान गणेश, शंकर और अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित है।
- **जगतदेव तालाब** – यह सतना में स्थित एक धार्मिक स्थान है, यह तालाब शहर के मध्य भाग में विद्यमान है। पर्यटक इस स्थान पर बहुत सरलता से पहुँच सकते हैं। इस जगह पर भगवान शंकर जी का मन्दिर बना हुआ है। यह तालाब मानव निर्मित तालाब है। यहाँ पर बहुत शान्ति रहती है, सावन महीने के सोमवार एवं शिवरात्रि के समय यहाँ सर्वाधिक भीड़ लगी रहती है।
- **रामवन मन्दिर** – यह मन्दिर सतना जिले की धार्मिक स्थल है, रामवन मन्दिर मे हनुमान जी की विशाल प्रतिमा देखने हेतु मिलती है, जो खड़ी हुई अवस्था में है। इस प्रतिमा की खासियत यह है कि इसकी ऊंचाई प्रत्येक वर्ष बढ़ती है। इसी विशिष्टता के कारण इस प्रतिमा को देखने हेतु दूर–दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। पर्यटन की दृष्टि से रामवन में बहुत सारी जगह है। पर्यटक यहाँ पंचवटी देख सकते हैं। पंचवटी के विषय में मान्यता है कि यहाँ पर प्रभु राम ने स्वयं अपपने हाथों से पांच वृक्ष लगाये थे। अतः इस जगह को पंचवटी के नाम से जाना जाता है। इस स्थान पर आम, नीम, आंवला, बेल व बरगद इत्यादि के पेड़ मिलते हैं। रामवन में तुलसी संग्रहालय भी मौजूद है, जिसमें पर्यटकों का पुस्तकों का संग्रह देखने हेतु मिलती है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर आकर्षित मूर्तियाँ स्थापित है, जिनमें भगवान शिव अपने परिवार साथ है, जो देखने में बहुत आकर्षक लगता है। रामवन मंदिर स्थापना के बारे में कहा जाता है कि बनारस निवासी व्यापारी बाबू शारदा प्रसाद सतना में व्यापार करने हेतु आये थे, इन्होंने इस स्थान पर गाड़ियों की एजेंसी खोली और उसके पश्चात वे 64 एकड़ जमीन क्रय किया तथा हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना किये। हनुमान जी की मूर्ति लगभग 70 वर्ष पुरानी है। यह स्थान पर्यटन के दृष्टि से सर्वाधिक उत्तम है। यहाँ पर तालाब स्थित है, जिनमें वेटिंग की सुविधा मुहैया है। तालाब के किनारे शिव भगवान का मन्दिर निर्मित है।
- **बड़ी माई मन्दिर** – जिले में स्थित यह एक सुविख्यात मंदिर है। इस स्थान पर नवरात्रि के समय सर्वाधिक भीड़ लगी रहती है। मैहर माता शारदा के दर्शन करने के पश्चात् श्रद्धालु बड़ी माई मन्दिर में दर्शन करने हेतु अवश्य आते हैं। यहाँ की मान्यता है कि माता शारदा के दर्शन करने के उपरांत इस मन्दिर में दर्शन करने जरूर जाना चाहिए नहीं दर्शन पूरा नहीं होता है। यहाँ शंकर जी की मन्दिर भी मौजूद है। यहाँ का वातावरण बड़ा ही शान्ति वाला होता है।
- **श्री वेंकटेश्वर मंदिर** – यह मन्दिर सतना शहर में विद्यमान एक धार्मिक स्थान है। यह मन्दिर रेलवे स्टेशन के समीप है। इस मन्दिर में भगवान विष्णु जी की मूर्ति विराजमान है। सतना जिले के पर्यटन आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। यहाँ का अद्भुत नजारा व्यक्तियों के मन को प्रफुल्लित कर देता है।
- **गैवीनाथ शिव मंदिर** – यह मन्दिर जिले की धार्मिक पर्यटन स्थल है। यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। इस जगह पर एक कुण्ड देखने हेतु मिलती है। यह मन्दिर काफी आकर्षक है। यहाँ पर सावन एवं शिवरात्रि के समय भीड़ रहती है। यह मन्दिर सतना शहर से करीब 35 किलोमीटर की दूरी पर बिरसिंहपुर में स्थित है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः सतना जिले के धार्मिक पर्यटन स्थल न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र हैं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। इन स्थलों का विकास और संरक्षण जिले के धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बेहतर सुविधाओं और योजनाओं के साथ, सतना जिले का धार्मिक पर्यटन क्षेत्र भविष्य में और अधिक समृद्ध हो सकता है।

संदर्भ –

1. सिंह, डॉ. सुमन्त (2005–06) – मध्यप्रदेश का पारिस्थितिकी पर्यटन, यू.जी.सी. प्रोजेक्ट
2. नेमी, डॉ. जगमोहन (2010) – पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3. द्विवेदी, कैलाश (1995) – राय ऋग्वैदिक भूगोल, साहित्य निकेतन, कानपुर
4. पुरोहित, खण्डेवाल (1993) – सांस्कृतिक भूगोल, नूतन प्रकाशन, कोट द्वार, उत्तरप्रदेश
5. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली
6. माथुर सुरेन्द्र (1962) – यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा, दिल्ली
7. अग्रवाल, के.एल. (1992) – "विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल", सरोज प्रकाशन, सतना (म.प्र.).
8. अग्रवाल, रोहित (2019) – "देश का हृदय मध्यप्रदेश पर्यटन", ओम सांई टैक बुक्स पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली.
9. भाटिया ए.के. (1978) – टुरिज्म इन इंडिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट स्ट्रलिंग, नई दिल्ली
10. दीक्षित, के.के. एवं गुप्ता, जे.पी. (2003) – "पर्यटक के विविध आयाम", तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली.
11. गौतम, राकेश एवं भदौरिया, जितेन्द्र सिंह (2010) – "मध्यप्रदेश का परिचय", टाटा मैक्ग्रो हिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
12 ग्रेवाल, पी.एस. (1990) – "सांख्यिकीय विश्लेषण की विधियां", स्टरलिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
13. गुप्ता, डॉ. पापिया दास (2014) – "पर्यटन एक अध्ययन", मध्यप्रदेश हन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल.
14. कौल, लोकेश (1984) – "शैक्षणिक शोध की प्रविधि", विकास पब्लिशिंग हाउस, प्रा.लि., नई दिल्ली.
15. माथुर सुरेन्द्र (1962) – यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, साहित्य प्रकाशन मालीवाड़ा, दिल्ली
16. पुरोहित, खण्डेवाल (1993) – सांस्कृतिक भूगोल, नूतन प्रकाशन, कोट द्वार, उत्तरप्रदेश
17. सिंह, सवीन्द्र (1996) – "पर्यावरण भूगोल", प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद.
18. शर्मा, अतुल (2012) – "भारत में पर्यटन विकास", इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर.
19. तिवारी, डॉ. वी.पी. – विन्ध्य प्रदेश का आर्थिक विकास, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, संस्करण 2008